SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

"शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरण सम्बन्धी जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन"

अविनाश तिवारी
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला (अमरोहा) उ0प्र0

डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह
शोध पर्यवेक्षक
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला (अमरोहा) उ0प्र0

सारांष–

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता का अध्ययन करना है। शोध के लिए सागर शहरी जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में अध्ययनरत् 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्यावरण जागरुकता का अध्ययन करने के लिए स्वनिर्मित रेटिंग स्केल का उपयोग किया गया है। तथ्यों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण द्वारा किया गया है। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अंतर पाया जाता है।

प्रस्तावना–

पर्यावरण एक समष्टि है, मानव इस समष्टि का एक अंग है। वह स्वतंत्र नहीं है, बल्कि अपनी एक महत्वपूर्ण एवं उच्च स्थिति रखता है। हर्स कोविट्स के अनुसार पर्यावरण उन सभी बाहरी दशाओं और प्रभावों का योग है, जो प्राणी या अवयवों के जीवन और विकास पर प्रभाव डालते हैं। मानव अपने विचारों के अनुसार विभिनन क्षेत्रों में पर्यावरण से सामंजस्य स्थापित करता है। प्राचीनतम ग्रन्थ, वेद, पुराण विभिन्न धर्मों के उपदेश ग्रन्थ, शिलालेख तथा वर्षों से चली आ रही मान्यताओं, विश्वास, किवदंतियाँ इस तथ्य को पुष्ट एवं प्रभावित करती हैं कि

मनुष्य का पर्यावरण के साथ अटूट सम्बन्ध है। अच्छा पर्यावरण सुखद जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। मनुष्य अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का खूब दोहन कर रहा है। आज पर्यावरण प्रदूषण विश्वव्यानी समस्या है, इस समस्या के समाधान के लिए मानव में पर्यावरण जागरुकता का होना अत्यंत आवश्यक है। अतः विद्यार्थियों में पर्यावरण रूचि विकसित करना समाज की आवश्यकता है। शहरी विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति अधिक जागरुकता होती है और ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता थोड़ी कम होती है।

अध्ययन के उद्देश्य–

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना–

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अंतर नहीं होता है।

उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन में पर्यावरण जागरुकता को मापने के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। इस प्रश्नावली में 50 प्रश्न हैं।

न्यादर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सागर के शहरी एवं ग्रामीण स्कूलों के 100 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। जिसमें 50 शहरी स्कूलों के विद्यार्थी एवं 50 ग्रामीण स्कूलों के विद्यार्थी सम्मिलित हैं।

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

प्रदत्तों का सारणीयन

सारणी

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.सं.	शोध समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t का मान	सार्थकता 0.01
		N	M	SD		
1.	शासकीय विद्यालय	50	41.85	6.72	2.62	सार्थक अंतर है।
2.	अशासकीय विद्यालय	50	38.01	7.1		
	df=98					2.58

सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता का क्रांतिक मान 2.62 पाया गया। प्राप्त मान की सार्थकता देखने के लिए 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी के दिए गए मान से तुलना की गई जिसमें यह पाया गया कि सी0आर0 का प्राप्त मान 2.62, 0.01 के मान 2.58 से अधिक है। अतः इससे ज्ञात होता है कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अंतर है। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अत5 पर्यावरण जागरुकता अधिक पाई जाती है।

निष्कर्ष–

अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता में अंतर पाया गया। शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता अधिक पायी गयी। शहरी विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता इसलिए अधिक पायी जाती है क्योंकि शहरी विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा पर्यावरण के विभिन्न कार्यक्रम, जैसे– पर्यावरण निबंध, वृक्षारोपण, खेलों द्वारा पर्यावरण का ज्ञान, पर्यावरण से सम्बन्धित प्रदर्शनी, चित्रकला, पर्यावरण दिवस, वाद–विवाद प्रतियोगिता, पर्यावरण फिल्म, समाचार पत्र–पत्रिकाओं का प्रदर्शन, गीत, नाटक आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन तथा इन आयोजनों के लिए पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्रों का विवरण आदि का आयोजन नियमित रूप से किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र में अभिभावक भी इतने अधिक जागरुक नहीं होते थे इसीलिए, ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता कम पायी जाती है

तथा शहरी विद्यार्थियों के अभिभावक अपने बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता पैदा करने के लिए विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ, टी0वी0, कम्प्यूटर द्वारा उपलब्ध कराते रहते हैं जिससे शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरुकता अधिक पायी जाती है, लेकिन ग्रामीण स्कूलों में इस प्रकार के आयोजन न के बराकर किये जाते हैं, जिससे पर्यावरण जागरुकता कम पायी जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय, राधाबल्लभ (2008), पर्यावरण शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
2. गुप्ता, अनु (2008), उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सरकारी गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के मध्य पर्यावरण एवं संवेदनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन।
3. शर्मा, आर0ए0 (2001), पर्यावरण शिक्षा, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. कपिल, हंस कुमार (2005), सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/05

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

अविनाष तिवारी एवं डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह

For publication of research paper title

"शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरण सम्बन्धी जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com